

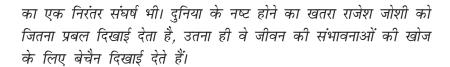


# राजेश जोशी

राजेश जोशी का जन्म सन् 1946 में मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ ज़िले में हुआ। उन्होंने शिक्षा पूरी करने के बाद पत्रकारिता शुरू की और कुछ सालों तक अध्यापन किया। राजेश जोशी ने किवताओं के अलावा कहानियाँ, नाटक, लेख और टिप्पणियाँ भी लिखीं। साथ ही उन्होंने कुछ नाट्य रूपांतर भी किए हैं। कुछ लघु फिल्मों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया। उन्होंने भर्तृहरि की किवताओं की अनुरचना भूमि का कल्पतरू यह भी एवं मायकोवस्की की किवता का अनुवाद पतलून पिहना बादल नाम से किया है। कई भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी, रूसी और जर्मन में भी राजेश जी की किवताओं के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं।

राजेश जोशी के प्रमुख काव्य-संग्रह हैं— **एक दिन बोलेंगे पेड़, मिट्टी** का चेहरा, नेपथ्य में हँसी और दो पंक्तियों के बीच। उन्हें माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान और सिहत्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

राजेश जोशी की कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्राय वाली होती हैं। वे जीवन के संकट में भी गहरी आस्था को उभारती हैं। उनकी कविताओं में स्थानीय बोली-बानी, मिज़ाज और मौसम सभी कुछ व्याप्त है। उनके काव्यलोक में आत्मीयता और लयात्मकता है तथा मनुष्यता को बचाए रखने



प्रस्तुत किवता में बच्चों से बचपन छीन लिए जाने की पीड़ा व्यक्त हुई है। किव ने उस सामाजिक–आर्थिक विडंबना की ओर इशारा किया है जिसमें कुछ बच्चे खेल, शिक्षा और जीवन की उमंग से वंचित हैं।

# बच्चे काम पर जा रहे हैं

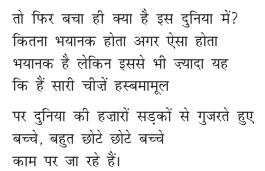
कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं सुबह सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें क्या दीमकों ने खा लिया है सारी रंग बिरंगी किताबों को क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन खत्म हो गए हैं एकाएक



पुष्रन-अभ्यास

- किवता की पहली दो पिक्तयों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मिस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।
- 2. किव का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' किव की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?
- 3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?
- 4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?
- 5. आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?
- 6. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

### रचना और अभिव्यक्ति

 काम पर जाते किसी बच्चे के स्थान पर अपने-आप को रखकर देखिए। आपको जो महसूस होता है उसे लिखिए।

## 140/क्षितिज

 आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?

### पाठेतर सक्रियता

- किसी कामकाजी बच्चे से संवाद कीजिए और पता लगाइए कि-
  - (क) वह अपने काम करने की बात को किस भाव से लेता/लेती है?
  - (ख) जब वह अपनी उम्र के बच्चों को खेलने/पढ़ने जाते देखता/देखती है तो कैसा महसूस करता/करती है?
- 'वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेलकूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं'— इस विषय पर वाद-विवाद आयोजित कीजिए।
- 'बाल श्रम की रोकथाम' पर नाटक तैयार कर उसकी प्रस्तुति कीजिए।
- चंद्रकांत देवताले की कविता 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' (लकड़बग्घा हँस रहा है)
   पिढ्ए। उस कविता के भाव तथा प्रस्तुत कविता के भावों में क्या साम्य है?

शब्द-संपदा
कोहरा - धुंध मदरसा - विद्यालय हस्बमामृल - यथावत

## यह भी जानें

संविधान के अनुच्छेद 24 में कारखानों आदि में बालक/बालिकाओं के नियोजन के प्रतिषेध का उल्लेख किया गया है, जिसके अनुसार 'चौदह वर्ष से कम आयु के किसी बच्चे को किसी कारखाने या खान में काम करने के लिए नियोजित नहीं किया जाएगा या किसी अन्य परिसंकटमय नियोजन में नहीं लगाया जाएगा।'